सोफिया कन्या महाविद्यालय

(स्वायत्तशासी)

अजमेर

परीक्षा और पाठयक्रम की योजना

पाठ्यक्रम

(2023-24)

के लिए कला स्नातक

(हिन्दी साहित्य)

सेमेस्टर – I से VIII

BACHELOR OF ARTS

Eligibility for admission in First Year of BA is 10+2 examination of any Board with at least 45% marks. With regard to admission on reserved category seats government rules will be applicable.

SCHEME OF EXAMINATION

The number of the paper and the maximum marks for each paper together, with the minimum marks required to pass are shown against each subject separately. It will be necessary for a candidate to pass in the theory as well as the practical part of a subject/paper, wherever prescribed, separately.

Classification of successful candidates shall be as follows:

First Division	60%	of the aggregate marks prescribed in Semesters I to VI taken together
Second Division	50%	

All the rest shall be declared to have passed the examination.

- For passing a candidate shall have to secure at least 40% marks in each course (Theory and Practical separately).
- No division shall be awarded in Semesters I to V.
- Whenever a candidate appears for a due paper examination, she will do so according to the syllabus in force.
- A candidate not appearing in any examination/absent in any paper of term end examination shall be considered as having DUE in those papers.

Program Outcome

The arts undergraduate program is designed to achieve the following outcomes-

1. To provide opportunities for the holistic development of the students and to enable them to make an effective contribution to the community, society and nation
2. To strive for scholastic excellence, instill moral values, create responsible citizens and to build global competencies
3. To create a conducive environment for experiential learning
4. To instill the core values of faith, integrity, accountability and creativity
5. To enable the students to contribute in building a more sustainable and equitable world
6. To enhance historical, political, environmental, spiritual, moral and ethical consciousness
7. To develop analytical and critical thinking skills in the field of research
8. To sensitize young minds through education towards social, cultural, psychological and economic well-being and to reach out to the underprivileged
9. To integrate and interlink knowledge, skills, values and attitudes to action
10. To provide a general understanding of the concepts and principles of selected areas of study thus enabling the students to decide upon specialized professional choices
11. To mould young girls into mature, responsible, just and empowered women.

कार्यक्रम के विशिष्ट परिणाम

बी.ए (हिंदी) पूर्णता के पश्चात, विद्यार्थी निम्नानुसार योग्य होंगे–

- हिंदी भाषा के उद्भव और विकास के मूलभूत सिद्धांतों की विवेचना करने में।
- महान लेखकों व कवियों की रचनाओं को समझकर व्याख्या करने में।
- नए साधन व निर्देशन से विभिन्न पहलूओं की समीक्षा करने में।
- हिंदी साहित्य के इतिहास के जानकार।
- साहित्य द्वारा समाज के नवनिर्माण में योगदान देने में सक्षम।

End Semester Examination Pattern

Maximum Marks: 70 **Duration: 2½ Hrs.**

Section A 10 x 1 =10 marks

Contains 10 Questions of 1 mark each and all are compulsory.

Three questions from each unit and one extra question from any one unit. 3 + 3 + 4 = 10 Questions

Section B 3 x 5 = 15 marks

Contains 3 questions with internal choice (Two questions from each unit).

Each Question carries 5 marks. A student has to attempt 3 questions, choosing at least one question from each unit.

Section C 3 x 15 = 45 marks

Contains 3 questions with internal choice (Two questions from each unit).

Each Question carries 15 marks. A student has to attempt 3 questions, choosing at least one question from each unit.

Course Structure for B. A. – I Year

Hindi Semester I								
Paper Code	Nomenclature Of the Paper	Contact Hours Per Week	Credits	Total Marks		Max. Marks	Min. Pass Marks	Exam Duration
				CIA	ESE			
MJHIN-101	आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs
Hindi Semester II								
MJHIN–201	हिंदी साहित्य का इतिहास	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.

Semester – I

MJHIN-101: आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक : 40**

श्रेय : 04 **अवधि 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणामः पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे

1. कवि कल्लोल व कबीर की साहित्यिक विरासत से परिचित होकर व्याख्यात्मक एवं कविता लेखन कौशल विकास व प्रश्नों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में।
2. नामदेव आदि संत कवि व जायसी की काव्यगत विशेषताओं से परिचित व व्याख्यात्मक कौशल विकास व प्रश्नों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में।
3. सूरदास व तुलसीदास का जीवन परिचय, काव्यगत प्रवृतियों में अंतर, व्याख्यात्मक कौशल विकास व प्रश्नों का समीक्षात्मक विश्लेषण करने में।
4. मीराँ व रसखान की काव्यगत विषेशताओं व प्राचीन संस्कृति से परिचित, व्याख्यात्मक व कविता लेखन कौशल विकास व प्रश्नों का समीक्षात्मक विश्लेषण करने में।
5. काव्य के गुण तथा दोष शब्द – शक्ति, की परिभाषा व उदाहरण सहित समझने में।
6. प्रमुख छंद व अलंकारों का उदाहरण सहित तुलनात्मक अध्ययन करने में।

पाठ्य पुस्तक – प्राचीन काव्य– संपादक –डॉ. सत्यनारायण शर्मा– पंचशील प्रकाशन जयपुर

इकाई–I

(1) ढोला मारू रा दूहा

'नरबर देस सुहावणउ' से 'अकथ कहाणी प्रेम की' दूहे तक (सं. रामसिंह, सूर्यकरण पारीक, नरोत्तम दास स्वामी, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी)

(2) कबीर

(कबीर ग्रंथावली – श्याम सुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)

दुलहनी गावहु.....पुरुष एक अविनासी।
संतौ भाई आई.....भया तम खीना।
पांडे कौन कुमति..... राम ल्यो लाई।
हम न मरै..... सुख सागर पावा।
माया महाठगिनी.....हाथ बिकांनीं
झीनी–झीनी बीनी..... धरि दीनी चदरिया।
पनी बिच मीन.....क्या कासी
काहे री नलिनी.....नहिं मुए हँमरें जान

गुरुदेव कौ अंग

सतगुरु की महिमा ..... दिखावणहार।
रामनाम कै पटतरे ..... रही मन मांहि।

सतगुरु सांचा ..... पड्या कलेजै छेक।
माया दीपक नर ..... एक आध उबरंत।

मन कौ अंग

मन कै मतै ..... अपूठा आंणि।
मन गोरख मन ..... आपैं करता सोई।
कबीर मन गाफिल ..... दरगह माँहि।
कबीर मन पंछी ..... माया के पास।
करता था तौ..... कहाँ तैं खाई।

विरह कौ अंग

यहु तन जालौं ..... बरसि बुझावे अग्गि।
विरह भुवंगम तन ..... जिवे त बौरा होई।
अंषडियां झाई पड़ी ..... राम पुकारि पुकारि।
हँसि–हँसि कंत ..... नहीं दुहागनि कोइ।

माया कौ अंग

त्रिषणा सींची ना बुझे ..... मेहा कुमिलाई।
माया तरवर त्रिविध ..... फल फीकौ तनि ताप।
कबीर माया मोह ..... रहे बसंत कूँ रोई।
माया की झल जग ..... रुई पलैटी आग।

चितावणी कौ अंग

सातों सबद लु बाजते ..... बैसण लागे काग।
यहु ऐसा संसार है ..... झूठे रंगि न भूल।
मिनषा जनम दुर्लभ है ..... बहुरि न लागै डार।
कबीर कहा गरबिया ..... खंखर भये पलास।
मैं–मैं बड़ी बलाई ..... रुई पलेटी आगि

(3) संतवाणी

नामदेव

(संत नामदेव–प्रकाशक, राधास्वामी सत्संग व्यास, डेरा काका जैमल सिंह, जिला अमृतसर, पंजाब)

हरि नांव हीरा ..... उतरै पारा।
जौ लग राम नामै ..... भवजल तरिये।
कपट मै न मिले ..... नामदेव दास।

रैदास

(योगेन्द्र सिंह, प्रकाशक– लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

अविगत नाथ निरंजन ..... गावै रैदासा।
अब कैसे छूटै राम ..... ऐसी भक्ति करे रैदासा।
ऊँचे मंदिर शाल ..... राम कहिं छूट्यो।

नानक

(नानकवाणी, अमृतसर)

मिलि जलु ..... जलहिं खटाना।
अब राखहु दास .....भाट की लाज।
सावण आइया हे सखी ..... बढ़ाई देइ।

दादू दयाल

(संत कवि दादू और उनका पंथ, डॉ. वासुदेव भामा, प्रकाशन–शोध प्रकाशन, नई दिल्ली)

नीकै राम कहत .....मारग सकरा
अजहूं न निकसे ..... चंद चकोर
सजनी रजनी घटती .....`

रज्जब

(संत काव्य– डॉ. परशुराम चतुर्वेदी, किताब महल, इलाहाबाद)

मन की प्यास ..... राम भजन करि भाई।

संतो मगन भया ..... धणी का चेरा।

ऐसो गुरु संसार ..... दर्शन पासा।

(4) जायसी

(जायसी ग्रंथावली– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)

नागमती वियोग खण्ड – 15 छंद (प्रारम्भ के)

इकाई II

(1) सूरदास (सूरसागर – नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी)

वात्सल्य

1. जसोदा हरि पालनैं झुलावै ।
2. मैया, मैं तो चंद खिलौना लेहौं !
3. खेलन अब मेरी जात बलैया ।
4. मैया बहुत बुरौ बलदाऊ ।
5. खेलन दूरि जात कत प्यारे ।

गोपी प्रेम

6. हरि . मुख . विधु मेरी अँखियाँ चकोरी ।
7. चितवन रोकै हूँ न रही।
8. बूझत स्याम कौन तू गोरी।
9. सजनी निरखि हरि कौ रूप।
10. अब तौ प्रगट भई जग जानी।

विरह वर्णन

11. मधुकर स्याम हमारे चोर ।
12. बिनु गोपाल बैरनि भईं कुंजै।
13. हमारे हरि हारिल की लकरी।
14. प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ।
15. संदेसनि मधुबन कूप भरे ।
16. सखि इन नैननि तै घन हारे।
17. निरगुन कौन देस कौ बासी?
18. ऊधौ मन माने की बात ।
19. संदेसो देवकी सौं कहियौ ।
20. ऊधौ मोहि ब्रज बिसरत नाहीं ।

(2) तुलसी (गीता प्रेस, गोरखपुर)

वाटिका प्रसंग – रामचरित मानस

विनय पत्रिका – उत्तरार्द्ध के प्रारम्भिक 5 पद

(3) मीरां रू मीरां पदावली : शम्भू सिंह मनोहर के प्रारम्भिक 25 पद

(4) रसखान (रसखान ग्रंथावली, संपादक–देशराज सिंह भाटी, अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली)

1- प्रान वही जु रहैं .....भायो।

2- बैन वही उन को .....सो है रसखानी

3- मानुष हौं तो .....कदंब की डारन

4- या लकुटी .....कुंजन ऊपर वारौं।

5- सेस गनेस महेस .....पै नाच नचावैं।

6- ब्रह्मा मैं ढूंढ्यो पुरानन .....राधिका पायन।

7- कहा रसखानि .....नन्द के कुमार को।

8- जो रसना रस ना बिलसै .....कालिंदी–कूल कदंब की डारन।

9- कंस के कोप की फैल गई .....कलंक तमाल ते कीरति डार सी।

10- द्रौपदी औ गनिका .....चाखनहारो सो राखनहारो

पाठ्य पुस्तक में इन सभी कवियों के संकलित अंश से व्याख्याएँ एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे ।

इकाई III

अलंकार – (अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, संदेह, भ्रान्तिमान, दृष्टान्त, उदाहरण दीपक, वक्रोक्ति, अर्थान्तरन्यास) छन्द –दोहा, चौपाई, सोरठा काव्यगुण, काव्यदोष, शब्द–शक्ति

सन्दर्भ पुस्तकें–

- कबीर– हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, मुम्बई।
- हिन्दी साहित्य का निर्गुण सम्प्रदाय– डॉ. पीताम्बर दत्त
- जायसी के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. भीमसिंह मलिक
- गोस्वामी तुलसीदास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- सूर की काव्यकला– डॉ. मनमोहन गौतम
- मीरां– सुधाकर पाण्डेय
- अलंकार मीमांसा – डॉ. सुनीमा गुप्ता
- हिंदी व्याकरण – डॉ. राजेश्वर प्रसाद चमुर्वेदी
- अलंकार मीमांसा – डॉ. सुनीता गुप्ता

Semester – II

MJHIN-201: हिंदी साहित्य का इतिहास

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक : 40**

श्रेय : 04 **अवधि : 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम

पाठ्यक्रम पुर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन, नामकरण परिस्थितियाँ, प्रवृतियाँ और आदिकाल का विस्तृत अध्ययन करने में।
2. भक्तिकाल की परिस्थितियों, प्रवुतियों, काव्यगत विशेषताओं, कवि परिचय की जानकारी व सगुण व निर्गुण काव्य धारा में अंतर समझने में।
3. रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण, काव्यगत विशेषताएँ, नामकरण सम्बन्ध विद्वानों के मतों की समीक्षा करने में।
4. आधुनिक काल – भारतेंदु काल, द्विवेदी काल व छायावाद के प्रमुख कवि रचनाओं व विशेषताओं का अध्ययन करने में।
5. छायावादोत्तर काल के कवि, रचनाएँ व प्रवृतियों को समझने में।
6. प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सक्षम।

पाठ्यपुस्तक : हिन्दी भाषा एवं साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–डॉ. राजेन्द्र शार्मा, प्रेम आधार रावत।

इकाई I

हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन, नामकरण, **आदिकाल–** पृष्ठभूमि, नामकरण, परिस्थितियाँ, रचनाएँ, रचनाकार, प्रवृतियाँ

भक्तिकाल– पृष्ठभूमि नामकरण, परिस्थितियाँ भक्ति का उद्भव व विकास, निर्गुण काव्यधारा– संत एवं सूफीकाव्य, सगुण काव्यधारा– राम एवं कृष्ण काव्यधारा, प्रमुख कवि, काव्यगत विषेशताएँ

इकाई II

रीतिकाल– नामकरण, पृष्ठभूमि, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त, रीतिसिद्ध कवि, प्रवृतियाँ, काल विभाजन, कालगत, परिस्थितियाँ

आधुनिक काल - भारतेन्दु काल, द्विवेदी काल, छायावादी काल

इकाई III

छायावादोत्तर काल, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता –रचनाएँ, रचनाकार, प्रवृतियाँ

सन्दर्भ पुस्तकें –

- हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्र.सभा, वाराणसी
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास – डॉ. श्री कृष्णलाल, हिन्दी परिषद वि. विद्यालय, प्रयाग
- हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी
- आधुनिक साहित्य की भूमिका – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय हिन्दी परिषद, वि. विद्यालय प्रयाग
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामकुमार वर्मा
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – सम्पादक – डॉ. नगेन्द्र

Course Structure for B. A. – II Year

Hindi Semester III								
Paper Code	Nomenclature Of the Paper	Contact Hours Per Week	Credits	Total Marks		Max. Marks	Min. Pass Marks	Exam Duration
				CIA	ESE			
MJHIN-301	रीतिकालीन काव्य – I	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs
MJHIN-302	हिंदी निबंध	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs
Hindi Semester IV								
MJHIN-401	रीतिकालीन काव्य – II	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs
MJHIN-402	हिंदी नाटक एवं एकांकी	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs

Semester – III

MJHIN-301: रीतिकालीन काव्य—I

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**

श्रेय: 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थि योग्य होंगे

1. रीतिकालीन काव्य के इतिहास के जानकार।
2. केशव व बिहारी का व्यक्तित्व व कृतित्व, व्याख्या कौशल विकास, प्रश्नों का समीक्षात्मक अध्ययन करने में।
3. घनानंद व देव का जीवन परिचय, काव्य सौंदर्य, व्याख्यात्मक व रचनात्मक लेखन कौशल विकास, प्रश्नों का समीक्षात्मक अध्ययन करने में।

रीतिकालीन काव्य संग्रह – सं. डॉ. सत्यनारायण शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।

इकाई I

पाठ्य पुस्तक में संकलित कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई II

1. केशवदास
2. बिहारी

इकाई III

3. घनानन्द
4. देव

पाठ्य पुस्तक में इन सभी कवियों के संकलित अंश से व्याख्याएँ एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे ।

सन्दर्भ पुस्तकें –

- हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र षुक्ल
- हिन्दी साहित्य का इतिहास –सं. डॉ. नगेन्द्र
- बिहारी रत्नाकर –सं. जगन्नाथ दास रत्नाकर
- घनानंद ग्रंथावली –सं. विष्वनाथ प्रसाद मिश्र
- देव ग्रंथावली –सं. हरि मोहन मालवीय

MJHIN-302: हिंदी निबंध

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंकः 40**
श्रेयः 04 **अवधि : 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे

1. निबंध विधा का अर्थ, स्वरुप, उद्भव–विकास के जानकार।
2. साहित्य जन समूह के हृद; का विकास है, कवि कर्त्तव्य, तुलसी के सामाजिक मूल्य, कवि तेरा भोर आ गया है निबंध में प्रतिपादित विचार, लेखको की भाषा शैली, सोदाहरण समीक्षा करने में।
3. राष्ट्र का स्वरूप, मानस की धर्मभूमि, पार्थिव धर्म, राजस्थानी साहित्व में राष्ट्रीय भावना निबंध में प्रतिपादित विचार, लेखको की भाषा शैली, सोदाहरण समीक्षा करने के साथ निबंध लेखन में कुशाल।

पाठ्य पुस्तक –साहित्यिक निबंध संग्रह –सं. डॉ. गजेन्द्र मोहन : अल्का पब्लिकेषन अजमेर ।

इकाई I

1. हिंदी निबंध का अर्थ, स्वरूप, परिभाषा, विशेषताए, प्रकार, उद्भव और विकास

इकाई II

1. साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है– बालकृष्ण भट्ट
2. कवि–कर्त्तव्य – महावीर प्रसाद द्विवेदी
3. तुलसी के सामाजिक मूल्य – डॉ. रामविलास शर्मा
4. 'कवि, तेरा भोर आ गया!' – कुबेर नाथ राय

इकाई III

1. राष्ट्र का स्वरूप – वासुदेव शरण अग्रवाल
2. 'मानस' की धर्मभूमि – रामचन्द्र शुक्ल
3. पार्थिव धर्म – विद्यानिवास मिश्र
4. राजस्थानी साहित्य में राष्ट्रीय भावना – डॉ. कन्हैयालाल सहल।

उपर्युक्त निबंधों में से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ पुस्तकें –

- हिन्दी निबंध का विकास –डॉ. ओंकार नाथ शर्मा।
- प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार दृ डॉ. विभु राम मिश।

Semester IV

MJHIN-401: रीतिकालीन काव्य – II

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**
श्रेयः 04 **अवधिः 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. सेनापति, भूषण की रचनाएँ, काव्य कला, व्याख्या कौशल विकास, प्रश्नों की समीक्षा करने में।
2. मतिराम, वृन्द की काव्यगत विशेषताएं, व्याख्या कौशल विकास, कौशल विकास, प्रश्नों का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में।
3. काव्य –लक्षण, हेतु, प्रयोजन की परिभाषा एवं तुलनात्मक अध्ययन करने में।

पाठ्यपुस्तक–रीतिकालीन काव्य संग्रह–सं डॉ. सत्यनारायण शर्मा, पंचषील प्रकाषन जयपुर।

इकाई I

1. सेनापति
2. भूषण

इकाइ II

3. मतिराम
4. वृन्द

पाठ्य पुस्तक में इन सभी कवियों के संकलित अंष से व्याख्याएँ एवं आलोचनात्मक प्रष्न पूछे जाएंगे।

इकाई III

सन्दर्भ पुस्तकें –

- भूषण ग्रंथावली–सं. देवरस शास्त्री
- मतिराम ग्रंथावली–सं. कृष्ण बिहारी मिश्र
- रस अलंकार छंद तथा अन्य काव्यांग – डॉ. वेंकट शर्मा

MJHIN-402: हिंदी नाटक एवं एकांकी

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**

श्रेय : 04 **अवधि : 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. हिंदी नाटक एवं एकांकी का उद्भव व विकास तथा तुलनात्मक अध्ययन करने में।
2. पठित एकांकियों की विशेषताओं से परिचित होकर समीक्षात्मक अध्ययन, एकांकीकार की भाषा शैली से अवगत होना।
3. कबीरा खड़ा बाजार में नाटक समस्या से अवगत होकर तात्विक समीक्षा करना।
4. अभिन्य क्षेत्र में कार्यक्रम संचालन करने व संवाद–योजना बनाने में।

पाठ्य पुस्तक –

1. एकांकी संग्रह – सं. डॉ. गजेन्द्र मोहन : अल्का पब्लिकेषन अजमेर ।
2. नाटक – कबीरा खड़ा बाजार में – लेखक भीष्म साहनी

इकाई I

हिंदी नाटक और एकांकी का उद्भव और विकास।

हिंदी नाटक और एकांकी में अंतर।

इकाई II

एकांकी संग्रह –

- नया पुराना – उपेन्द्र नाथ 'अश्क'
- दीपदान –डॉ. रामकुमार वर्मा
- बीमार का इलाज – उदयशंकर भट्ट (कोविड – 19 के सन्दर्भ में)
- भोर का तारा – जगदीश चन्द्र माथुर
- ईद और होली – सेठ गोविन्द दास
- सबसे बड़ा आदमी – भगवती चरण वर्मा

इकाई III

नाटक – कबीरा खड़ा बाजार में – भीष्म साहनी

इकाई 2 व 3 से व्याख्या एवं प्रष्न पूछे जाएंगे ।

सन्दर्भ पुस्तकें –

- कबीरा खड़ा बाज़ार में – श्रीमती उषा जैन
- भीष्म साहनी रूव्यक्ति और रचना – राजेश्वर सक्सेना रूप्रताप ठाकुर
- हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेन्द्र सिंह

Course Structure for B. A. – III Year

Hindi Semester V								
Paper Code	Nomenclature Of the Paper	Contact Hours Per Week	Credits	Total Marks		Max. Marks	Min. Pass Marks	Exam Duration
				CIA	ESE			
MJHIN-501	आधुनिक काव्य – I	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-502	कथा साहित्य (कहानी)	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
Hindi Semester VI								
MJHIN-601	आधुनिक काव्य – II	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-602	कथा साहित्य (उपन्यास)	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.

Semester – V

MJHIN-501: आधुनिक काव्य (छायावाद तक) - I

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**

श्रेय : 04 **अवधि 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. आधुनिक काव्य का प्रवृतिगत इतिहास व पठित कवियों के परिचय को समझने में।
2. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त का काव्य सोष्ठ व उनकी नवीन विचारधारा से परिचित।
3. जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमि त्रानन्दन पंत के साहित्यिक योगदान से परिचित सृजनात्मक लेखन विकास व समीक्षात्मक अध्ययन करने में।

पाठ्य पुस्तक – आधुनिक काव्य संचयन– सं. डॉ. हेतु भारद्वाज।

इकाई I

आधुनिक काव्य की प्रवृतियाँ, नामकरण, नवजागरण युग एवं पठित कवियों का परिचय (अयोध्या सिंह उपाध्यय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जनशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत)

इकाई II

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'।
  1. इन्द्र का गर्वहरण, प्रिय प्रवास (द्वादष सर्ग)
  2. एक तिनका
- मैथिलीशरण गुप्त
  1. 'सखि, वे मुझसे कहकर जाते' (यशोधरा)
  2. साकेत (नवम् सर्ग)

इकाई III

- जयशंकर प्रसाद
  1. श्रद्धा सर्ग (कामायनी)
- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
  1. जागो फिर एक बार–1
- सुमि़त्रानन्दन पंत
  1. नौका विहार

इकाई 2 व 3 से व्याख्या एवं प्रष्न पूछे जाएंगे

सन्दर्भ पुस्तकें –

- पन्त ,प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त – रामधारी सिंह दिनकर
- प्रसाद, निराला, अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- आधुनिक हिंदी कविता का विकास – डॉ. हेतु भारद्वाज

- जयशंकर प्रसाद और कामायनी – प्रो.राजकुमार शर्मा

MJHIN-502: कथा साहित्य (कहानी)

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंक :40**
श्रेयः 04 **अवधि : 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे –

1. कहानी विधा के इतिहास के जानकार।
2. पठित कहानियों की मूल संवेदना की समीक्षा, कहानीकार की कहानी कला का निरूपण करने में।
3. पठित कहानियों की नवीन विचारधारा व कहानीकार के साहित्यिक योगदान से अवगत व व्याख्याात्मक कौशल विकास।
4. कहानी लेखन के क्षेत्र में

पाठ्य पुस्तक – कहानी संचयन – सं हेतु भारद्वाज

इकाई I

हिन्दी कहानी की परिभाषा एवं स्वरुप, कहानी का विकास एवं तत्व , स्वतंत्रता के पश्चात कहानी की विभिन्न धाराएँ , प्रमुख कथाकारों का परिचयात्मक अध्ययन

इकाई II

1. उसने कहा था – चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'
2. पुरस्कार – जयशंकर प्रसाद
3. पूस की रात – प्रेमचन्द
4. ताई – विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'

इकाई III

1. नशा – मन्नू भण्डारी
2. एक गौ – जैनेन्द्र कुमार
3. मेरा घर कहाँ– नासिरा शर्मा
4. खोई हुई दिशाएँ – कमलेश्वर

इकाई 2 व 3 से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जाएंगे ।

सन्दर्भ पुस्तकें –

- हिंदी कहानियों की शिल्पविधि का विकास – डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
- मन्नू भंडारी सृजन के शिखर – सं .सुधा अरोड़ा

Semester VI

MJHIN-601: आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर)- II

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**
श्रेयः 04 **अवधि 2½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे

1. रामाधारी यिंह दिकर, गजानन्द माधव मुक्तिबोध, धर्मवरी भारती के काव्य की व्याख्या, कलापक्ष – भावपक्ष की समीक्षा करने में
2. सच्चिदानन्द ही.वा.अज्ञेय, महादेवी वर्मा, नरेश मेहता की काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन करना व काव्य सृजन के क्षेत्र में।
3. रस सम्प्रदाय के विस्तृत अध्ययन से परिचित।

पाठ्यपुस्तक–आधुनिक काव्य संचयन–सं. डॉ. हेतु भारद्धाज।

इकाई I

1. **रामधारी सिंह दिनकर**
   1. कुरूक्षेत्र (छठा सर्ग)
2. **गजानन्द माधव मुक्तिबोध**
   1. लकड़ी का रावण, ('चांद का मुंह टेढ़ा है' काव्य संग्रह से),
3. **धर्मवीर भारती**
   1. कनुप्रिया, (प्रारम्भिक तीन गीत)

इकाई II

1. **सच्चिदानन्द ही.वा.अज्ञेय**
   1. हरी घास पर क्षण भर (इत्यलम् काव्य संग्रह से)
   2. बावरा अहेरी (बावरा अहेरी काव्य संग्रह से)
2. **महादेवी वर्मा**
   1. दीपशिखा से प्रारम्भिक तीन गीत
3. **नरेश मेहता**
   1. सूर्योदय : एक संभावना (जहां–जहां क्षित्तिज है)
   2. वैष्णव यात्रा (जहां–जहां क्षितिज है)

इकाई 1 व 2 से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जाएंगे

इकाई III

सन्दर्भ पुस्तकें –

- नयी कविता ,स्वरुप और समस्याएं – डॉ. जगदीश गुप्त
- आधुनिक साहित्य की भूमिका – डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
- नया काव्य : नए मूल्य – ललित शुक्ल
- दिनकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व – एस .के पद्मावती
- समकालीन कविता के तीन पड़ाव – डॉ. हुकुमचंद राजपाल
- अलंकार पारिजात – डॉ. नरोत्तमदास स्वामी

MJHIN-602: कथा साहित्य – (उपन्यास)

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**
श्रेयः 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. हिंदी उपन्यास विधा का स्वरुप, तत्व व प्रकार को समझने में।

2. उपन्यास व कहानी का विकास व अंतर की विशेशताओं के साथ जीवन मूल्यों को समझने में।
3. व्याख्यात्मक कौशल विकास व शेध क्षेत्र में।

पाठ्य पुस्तक- त्यागपत्र (जैनेन्द्र कुमार)

इकाई–I

हिंदी उपन्यास की परिभाषा,स्वरूप तत्व, प्रकार

इकाई–II

हिंदी उपन्यास का उद्भव व विकास क्रम – प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंद युगीन, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास, स्वातंत्रयोत्तर उपन्यास, उपन्यास व कहानी में अंतर

इकाइ–III

उपन्यास : त्यागपत्र (जैनेन्द्र कुमार)

(इकाई 3 से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जाएंगे)

सन्दर्भ पुस्तकें –

- जैनेन्द्र और नैतिकता– ज्योतिष जोश
- त्यागपत्र – समीक्षा – प्रो.राजेश शर्मा
- हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ.नगेन्द्र सिंह
- त्यागपत्र (सहायक पुस्तक)– डॉ.गंगा साईं प्रेमी
- त्यागपत्र – जैनेन्द्र कुमार (कॉम्बो सेट ऑफ़ टेक्स्ट बुक एंड गाइड बुक)

Course Structure for B. A. – IV Year

Hindi Semester VII								
Paper Code	Nomenclature Of the Paper	Contact Hours Per Week	Credits	Total Marks		Max. Marks	Min. Pass Marks	Exam Duration
				CIA	ESE			
MJHIN-701	आधुनिक हिन्दी कविता	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-702	मुंशी प्रेमचंद	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-703	राजस्थान की प्रमुख मध्यकालीन कवयित्री – मीराबाई	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
Hindi Semester VIII								
MJHIN-801	कथेतर विधाएँ	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-802	दलित – विमर्श	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-803	लघु शोध प्रबंध	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.
MJHIN-804	भाषा विज्ञान	04	04	30	70	100	40	2½ Hrs.

Semester – VII

MJHIN- 701 आधुनिक हिन्दी कविता

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**
श्रेय 04 **अवधि : 2½ घंटे**

पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे –

1. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व – कृतित्व को समझने में ।
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं धर्मवीर भारती की व्याख्यात्मक कौशल विकास को समझने में।
3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं धर्मवीर भारती के काव्य की नवीन विचारधाराओं से परिचित व काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन करके काव्य सृजन के क्षेत्र में।

इकाई I

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला एवं धर्मवरी भारती – व्यक्तित्व एवं कृतिव

इकाई II

राम की भाक्ति पूजा – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (व्याख्या और प्रश्न)

इकाई III

अँधा युग – धर्मवरी भारती (व्याख्या और प्रश्न)

सन्दर्भ पुस्तकें –

- नयी कविता के प्रबंध काव्य – डॉ.उमा कान्त,वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली
- कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह
- राम की शक्तिपूजा – डॉ. गंगा साईं प्रेमी
- राम की शक्तिपूजा की टीका – अभिमन्यु प्रताप सिंह, डॉ. राम सुधार सिंह

MJHIN-702: मुंशी प्रेमचंद

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**
श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणामः पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. कहानी विधा के इतिहास के जानकार।

2. मुंशी प्रेमचंद के व्यक्तित्व व कृतित्व के विस्तृत अध्ययन करने में।
3. पठित कहानियों की मूल संवेदना व नवीन विचारधारा से परिचित।
4. हिंदी उपन्यास विधा के जानकार।
5. उपन्यास व कहानी का विकास व अंतर को समझने में कुशल।
6. निर्मला उपन्यास की तात्विक समीक्षा व मुंशी प्रेमचंद की उपन्यास कला की विशेषताओं को प्रकट करने में।

इकाई I

मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतिव

इकाई II

उपन्यास – निर्मला

इकाई III

कहानी संग्रह – मानसरोवर भाग – 1

(इकाई 1 से प्रश्न एवं इकाई 2 व 3 से व्याख्या एवं प्रश्न पूछे जाएंगे)

संदर्भ पुस्तके–

- प्रेमचंद और उनका युग – डॉ. रामविलास शर्मा
- कलम का सिपाही– अमृतराय
- समस्या मूलक उपन्यासकार – डॉ. महेंद्र भटनागर
- प्रेमचंद कथा कोष – डॉ. कमल किशोर गोयनका
- प्रेमचंद –संपादक. डॉ. विश्वनाथ तिवार
- मानसरोवर भाग 1, 2, 4, 8
- हिंदी उपन्यासः उद्भव और विकास –डॉ.प्रताप नारायण टंडन
- द्वितीय महायुद्धोत्तररू हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ.लक्ष्मी सागर वार्षे;
- हिंदी साहित्य का इतिहास– संपादक डॉ.नगेंद्र।

MJHIN-703: राजस्थान की प्रमुख मध्यकालीन कवयित्री – मीराबाई

अधिकतम अंकः 100 **न्यूनतम अंकः 40**

श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम

पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे–

1. मीराबाई का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व को समझने में।
2. मीराबाई के साहित्यिक योगदान से परिचित सृजनात्मक लेखन विकास व काव्य की व्याख्या, कलापक्ष –भावपक्ष की समीक्षा करने में ।
3. नारी विमर्श के सन्दर्भ में मीराबाई का महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अनुपम योगदान को समझने में।

इकाई I

मीरा का जीवन वृत्त – व्यक्तित्व एवं कृतिव, मीरा की भाषा।

इकाई II

मीरा पदावली – चयनित 1 से 50 पद (संपादक – भाम्भू सिंह मनोहर)

(व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न)

इकाई III

नारी विमर्श एवं मीरा

सन्दर्भ पुस्तकें–

- मीरा – सुधार पाण्डेय
- मीरा बाई – कल्याण सिंह शेखावत।

Semester VIII

MJHIN-801 - कथेतर विधाएँ

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**
श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणामः पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे

1. यात्रावृत्त व रिपोर्ताज का परिचय, प्रमुख विशेषताओं से परिचित होकर आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम
2. संस्मरण व रेखाचित्र का परिचय, प्रमुख विशेषताओं से परिचित होकर आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम
3. आत्मकथा व जीवनी का परिचय, प्रमुख विशेषताओं से परिचित होकर आलोचनात्मक अध्ययन करने में सक्षम

इकाई I

यात्रावृत्त एवं रिपोर्ताज परिचय

1. यात्रावृत्त साहित्य का सामानय परिचय
2. श्राहुल सांकृत्यायन के यात्रा – वृत्तों की प्रमुख विशेषताएँ
3. रिपोर्जाज साहित्य का सामान्य परिचय
4. रांगेय राघव के रिपोर्ताज – साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ।
5. 'सरयू पार की यात्रा' का अध्ययन (केवल लधूत्तरात्मक प्रश्नों के लिए)

इकाई II

संस्मरण एवं रेखाचित्र

1. संस्मरण एवं रंखाचित्राः परिभाषा, तत्त्व एवं स्वरूप
2. संस्मरण साहित्य का सामान्य परिचय
3. महादेवी वर्मा के संस्मरण – साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ
4. रेखाचित्र – साहित्य का सामान्य परिचय
5. 'राजर्षि का जीवन – दर्शन' एवं 'बरगद' का अध्ययन (केवल लधूत्तरात्मक प्रश्नों के लिए)

इकाई III

आत्मकथा एवं जीवनी

1. आत्मकथाः परिभाषा, तत्त्व एवं स्वरूप
2. आत्मकथा साहित्य का सामान्य परिचय
3. हरिवंश राय बच्चन के आत्मकथा – अंश 'मैं और मेरी कविता' का आलोचनात्मक अध्ययन
4. जीवनीः परिभाषा, तत्त्व एवं स्वरूप
5. जीवनी साहित्य का सामान्य परिचय

सहायक पुस्तकें:

- हिंदी साहित्य की नयी विधाएँः कैलाश चंद्र भाटिया
- गद्य की नयी विधाओं का विकासः माजदा असद
- हिंदी साहित्य कोशः धीरेंद्र वर्मा (सं.)
- गद्य की नयी विधाओं का विकासः माजदा असद
- हिंदी साहित्य कोशः धीरेंद्र वर्मा (सं.)
- हिंदी का गद्य साहित्यः रामचंद्र तिवारी
- हिंदी साहित्य का इतिहासः नगेंद्र (सं.)
- हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहासः बच्चन सिंह
- गद्य की पहचानः अरूण प्रकाश

MJHIN-802 – दलित–विमर्श

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**

श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे –

1. दलित विमर्श की अवधारणा से परिचित
2. दलित विमर्श की दृष्टि से आत्मकथा के महत्व को समझने में सक्षम
3. दलित लेखन की दशा एवं दिशा से परिचित

इकाई I

1. दलित विमर्शः अवधारणा एवं विभिन्न दृष्टियाँ
2. वैचारिक स्रोत

इकाई II

1. दलित विमर्श की दृष्टि से आत्मकथा का महत्त्व
2. सौंदर्यशास्त्र संबंधी मान्यताएँ।

इकाई III

1. हिंदी साहित्य में दलित लेखनः दशा और दिशद
2. दलित विमर्श की उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ।

सहायक पुस्तकें:

- अम्बेडकरः एक चिंतनः मधु लिमये।
- हरिजन से दलितः सं. राजकिशेर।
- दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्राः ओमप्रकाश वाल्मीकि
- दलित विमर्श की भूमिकाः कँवल भारती
- दलित साहित्यः एक अंतर्यात्राः बजरंग बिहारी तिवारी
- आधुनिकता के आयने में दलितः सं. अभय कुमार दुबे
- मै हिंदू क्यों नहीं: कांचा इल्लैया
- आज का दलित साहित्यः तेज सिंह

पत्रिकाएँ–

- अपेक्षाः सं. तेजसिंह (दलित विशेष) नियामित
- दलित अस्मिताः सं. प्रो. विमल थोराट
- हंसः सत्ता–विमर्श और दलित, अगस्त, 2008
- वसुधाः दलित विशेषांक, अंक 58

MJHIN-803 - लघु शोध प्रबंध

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**

श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम : पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगै

1. शोध के क्षेत्र की प्रारंभिक व व्यावहारिक जानकारी से परिचित
2. रूचि के अनुसार विषय विशेष में गहन जानकारी
3. शोध पत्र लेखन व पी एच. डी करने में सक्षम

MJHIN-804-भाषा विज्ञान

अधिकतम अंक : 100 **न्यूनतम अंक :40**

श्रेय 04 **अवधि : 2 ½ घंटे**

अध्ययन के परिणाम– पाठ्यक्रम पूर्ण होने के बाद विद्यार्थी योग्य होंगे।

1. हिन्दी भाषा का उद्भव व विकास के जानकार
2. हिन्दी की उपभाषाओं, बोलियों व करूत्र के जानकार
3. देवनागरी लिपि व खडी बोली की विशेषताओं से परिचित

इकाई - I

हिन्दी भाष का उद्भव एवं विकास, भाषा की परिभाष, भाष और बोली में अंतर

इकाई – II

हिन्दी का प्रमुख बोलियां एवं क्षेत्र

इकाई - III

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, खडी बोली हिन्दी की प्रधानता

सन्दर्भ पुस्तकें

- भाषा विज्ञान– भोलानाथ तिवारी